By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-2

Topic - Social change
Class - B. A. Degree - I (Hons.) paper-I Unit-10
Subject - Political science
Date - 28 Apr. 2020

By Rahul kumar Jha.

सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत :-
(Theories of social change)

सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1) चक्रिय सिद्धांत (Cyclical Theory)
2) रेखीय सिद्धांत (Lineal Theory)

चक्रिय सिद्धांत :- इस सिद्धांत के अनुसार समाज का परिवर्तन एक चक्र की भांति होता है। जिसमें एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा और इसी प्रकार अन्य अवस्था के बाद पुनः पहले चक्र पर वापसी होती है। इसमें वही चक्र दोहराया जाता है। इस सिद्धांत के समर्थकों में सोरोकिन,

पैरेटो, हॉयनबी एवं स्पेंगलर प्रमुख हैं।

जर्मन विद्वान ओस्वाल्ड स्पेंगलर ने सन् 1918 में अपनी पुस्तक 'The Decline of the West' में सामाजिक परिवर्तन के बारे में अपना चक्रीय सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस पुस्तक में उन्होंने सामाजिक परिवर्तन के उद्विकासीय सिद्धांतों की आलोचना की। उन्होंने कहा कि परिवर्तन कभी भी एक सीधी रेखा में नहीं होता है। सामाजिक परिवर्तन का एक चक्र चलता है, हम जहाँ से प्रारंभ होते हैं, घूम-फिर कर पुनः वहीं पहुँच जाते हैं।

उनके अनुसार जैसे मनुष्य जन्म लेता है, युवा होता है, वृद्ध होता है और मर जाता है तथा फिर जन्म लेता है, यही चक्र मानव समाज एवं सभ्यताओं में भी पाया जाता है। मानव की सभ्यता एवं संस्कृति भी उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश के चक्र से गुजरती है।

2) रेखीय सिद्धांत :-

रेखीय सिद्धांत के अंतर्गत इन परिवर्तनों को शामिल किया जाता है, जो एक सीधी रेखा में

एवं एक निश्चित दिशा में होता है। इसमें परिवर्तन के पश्चात बिन्दु पर पुनर्वापसी नहीं होती है। मनुष्य के सामाजिक विकास की अवस्थाएं श्रेणीय परिवर्तन के रूप में ही दिखाई देता है, जिसमें व्यक्ति एवं समाज एक से उच्चतर अवस्था की ओर अग्रसर होता हुआ दिखाई पड़ता है। इस सिद्धांत के समर्थकों में ऑगस्त कॉम्टे, कार्ल मार्क्स, हरबर्ट स्पेन्सर, थॉरेस्टीन वेबलेन, एल. एच. मॉर्गन आदि सम्मिलित हैं।

आगस्त कॉम्टे ने सामाजिक परिवर्तन का संबंध मानव के बौद्धिक विकास से जोड़ा है। उन्होंने बौद्धिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन के तीन स्तर माने हैं - पहला, धार्मिक स्तर, यह समाज की प्राथमिक अवस्था थी। इसमें मानव प्रत्येक घटना को ईश्वर एवं धर्म के संदर्भ में समझने का प्रयत्न करता है। दूसरा तात्विक स्तर, इसमें घटना की व्याख्या गुणों के आधार पर की जाती है। इस अवस्था में अलौकिक शक्ति में विश्वास कम हुआ। तीसरा वैज्ञानिक स्तर, यह वर्तमान में विद्यमान है। इसमें मानव लौकिक घटनाओं की व्याख्या वैज्ञानिक नियमों एवं तर्क के आधार पर करता है।

CHAPTER END